प्रकाशन तिथि : 01 दिसम्बर, 2022
प्रेषण तिथि : 04 दिसम्बर, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 18 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

अपनी शक्ति का क्षात्रधर्म के अनुकूल उपयोग करें: संघप्रमुख श्री

('लोक सेवाएं, लोकहित एवं नया भारत' विषय पर राजपूत राजपत्रित अधिकारियों की कार्यशाला संपन्न)

क्षात्रधर्म क्या है? हमारे वेदों में, हमारे पुराणों में, हमारे ग्रंथों में, गीता में और वर्तमान साहित्य में भी क्षात्रधर्म की बहुत व्याख्या की गई है और आप सभी लोगों ने कहीं ना कहीं उसे पढ़ा होगा, सुना होगा, जानते होंगे। गीता में जो क्षात्रधर्म का वर्णन आया है, वह है - परित्राणाय साधूनाम, विनाशाय च दुष्कृताम। जो साधु जन हैं उनकी रक्षा करें, जो अच्छे लोग हैं उनका हित करें और जो असाधु हैं, जो दुष्ट जन हैं उनका संहार करें, उन को नष्ट करने का प्रयास करें, यही है - परित्राणाय साधूनाम, विनाशाय च दुष्कृताम। लेकिन थोड़ा सा विचार हम करें कि किसी भी साधु की, सज्जन की रक्षा करनी है और दुश्मनों का संहार करना है, बुरे लोगों से लड़ाई लड़नी है, बुरी प्रवृत्तियों को नष्ट करना है तो केवल आवाज देने से, भाषण देने से नहीं हो सकेगा, इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन मात्र से भी यह होने वाला नहीं है। उसे दूर भगाने का उपाय है हमको शक्ति अर्जित करनी होगी। जब तक हमारे पास में शक्ति नहीं होगी तब तक हम उन दुष्प्रवृत्तियों का संहार नहीं कर सकते, चाहे वे बाहर की हों, चाहे भीतर की हों। अच्छी प्रवृत्ति को लाने के लिए भी शक्ति की आवश्यकता है, अच्छे लोगों को एकत्रित करने के लिए भी शक्ति की आवश्यकता है। इसलिए उस शक्ति का निर्माण करना आवश्यक है। श्री क्षत्रिय युवक संघ शक्ति का ही निर्माण कर रहा है, शक्ति को एकत्रित करने का ही प्रयास हो रहा है। चाहे वह शारीरिक रूप में हो, चाहे वह बौद्धिक रूप में हो, चाहे वह हृदय के भाव के रूप में हो, उस शक्ति को एकत्रित किया जाता है। शारीरिक बल, साधन बल, बुद्धि बल, भाव बल जैसे अनेक प्रकार के बलों को यहां संयोजित किया जाता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

जो दूसरों के अधिकारों की रक्षा करे, वही अधिकारी: संरक्षक श्री

(राजपूत राजपत्रित अधिकारी कार्यशाला में माननीय संरक्षक श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)

प्रिय बंधुओं, बहनों, माताओं, अधिकारियों.. बहुत बातें और सुझाव यहां आये। ऐसा नहीं है कि यह बातें पहले कभी हुई नहीं, ऐसा नहीं है कि यह सुझाव पहले कभी आए नहीं है लेकिन उनमें से हम कौन से एग्जीक्यूट कर पाए, कौन से नहीं कर पाए, हमारी क्षमताओं के अनुसार हमारे कदम चले या नहीं चले, यह मुख्य बात है। अधिकारी यहां मंच पर भी है, मंच के सामने भी है। अधिकारी का अर्थ भी आप जानते होंगे पर मैं आपके साथ मेरा अर्थ शेयर करना चाहता हूं। अधिकारी वह है जो दूसरों के अधिकारों की रक्षा करते हैं। जो दूसरों को जिंदगी प्रदान करता है, खुद मर के भी दूसरों को जीवनदान देता है वह क्षत्रिय है। ऐसा नहीं है कि आप लोगों ने

इसको अनुभव नहीं किया है या ये बातें नहीं सुनी हैं लेकिन कितने कदम चले? किन मजबूरियों ने आपके पैरों में जंजीर डाली? कहीं अधिकारी होने के नाते तो आप नहीं रुक गए, कहीं परिवार के मुखिया होने के कारण तो आपके कदम नहीं रुक गए? सोचना पड़ा हो कि मैं कुछ करना चाहता हूं लेकिन परिवार का क्या होगा? बहुत बड़ी बात जो हमने शास्त्रों में पढ़ी है कि भगवान ही हमारा सृष्टा है, भगवान ही हमारा पालनहार है और भगवान ही प्रलय करके इस दुनिया को नष्ट कर देता है। बीच में हम आ जाते हैं कि यह काम मैंने किया है। हमारा सोच तो यह होना चाहिए कि हमको भगवान ने शुभ अवसर प्रदान किया कि हमको अधिकारी बनाया, हमको डॉक्टर बनाया, हमको वकील बनाया, हमको पति बनाया, पत्नी बनाया। हमारा स्वधर्म कहता है कि हम हमारी क्षमताओं को नापें कि हम क्या कर सकते हैं। यह इतना ज्यादा बड़ा प्रश्न नहीं है कि हम नहीं होंगे तो क्या होगा। आज भगवान राम सशरीर नहीं है तो भी दुनिया चल रही है, कृष्ण भगवान नहीं है तो भी चल रही है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

बेईमानी के रहते एकता नहीं आ सकती: संरक्षक श्री

(जोधपुर में हुआ किसान सम्मेलन का आयोजन)

'ईशावास्यं इदं सर्वं, यत्किञ्च जगत्यां जगत। तेन त्यक्तेन भुञ्जिथा:, मा गृध: कस्यस्विद्धनम्॥'

यह ईशोपनिषद का पहला मंत्र है। जो कुछ भी हमको दिखाई देता है या नहीं दिखाई देता है, जो दृष्टिगोचर है या दृष्टि में नहीं है, उसमें ईश्वर का वास है। कई बार हम यह भूल जाते हैं कि हम क्या कर रहे हैं लेकिन भगवान तो सब देख रहा है। इसलिए 'मतीरा को भारो बांधनो हो तो बांधो, पाप को भारो मत बांधो'। जो कुछ ईश्वर ने हमको दिया है उसका सदुपयोग करें। भोग नहीं, उपभोग नहीं, सदुपयोग करें। ईश्वर ने क्या दिया है? यह शरीर दिया है, मन दिया है, बुद्धि दी है, चित्त दिया है, अहंकार दिया है, इंद्रियां दी हैं, उनका सदुपयोग करें। रात को सोते

समय विचार करें कि दिन में कितनी बार आपने अनुशासन भंग किया है, वह सब पाप है और यदि हम पाप करते रहे तो एकता नहीं आ सकती। यहां जो किसानों की एकता की बात चल रही है, परिवारों की एकता की बात चल रही है, राष्ट्र को एक बनाने की बात चल रही है, जो मानव मात्र को और समस्त राष्ट्रों को एक बनाने की बात चल रही है, वह अधूरी रहेगी, वह कभी पूरी नहीं होगी। जहां बेईमानी है, जहां ईमान हटा वहां दुर्घटना घट जाएगी। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने 13 नवंबर को जोधपुर शहर स्थित हनुवंत छात्रावास में श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा आयोजित किसान सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने आगे श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना का कारण बताते हुए कहा कि कई वर्षों से यह महसूस किया जा रहा था कि बच्चों को संस्कारित करने का काम, बच्चियों को संस्कारित करने का काम, महिलाओं को संस्कारित करने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ करता रहा है। अब हमको कुछ ऐसे काम जो बाहर दिखाई देते हैं, वे भी करने चाहिए और उस पर विचार करते करते श्री प्रताप फाउंडेशन की बैठक 2001 में जयपुर में हुई थी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

अपनी शक्ति का क्षात्रधर्म के अनुकूल उपयोग करें: संघप्रमुख श्री

(पृष्ठ एक से लगातार)

जो साधन बल की बात आती है उसी शक्ति का एक रूप यह प्रशासन भी है और क्षात्रधर्म का पालन प्रशासन के बिना भी नहीं हो सकता। यह सही है कि उस शक्ति का हमको निर्माण करना होगा, उस शक्ति को हमको एकत्रित करना होगा लेकिन केवल शक्ति एकत्रित कर ली जाए, केवल हम प्रशासन में आ जाएं, केवल हम अधिकारी बन कर बहुत बड़े पद पर पहुंच जाएं, उसी से उस शक्ति का सदुपयोग नहीं हो सकता। क्यों? क्योंकि शक्ति तो रावण के पास भी थी, कंस के पास भी थी, अलाउद्दीन खिलजी और औरंगजेब के पास भी थी, लेकिन केवल शक्ति को अर्जित करना तो राक्षसी प्रवृत्ति भी हो सकती है इसलिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ आप को यही संदेश देना चाहता है कि हमने जिस शक्ति का निर्माण किया है, उस शक्ति के निर्माण को हम क्षात्रधर्म के अनुकूल उपयोग में लेवें। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय श्री लक्ष्मण सिंह बेण्याकाबास ने अशोक क्लब, जयपुर में 20 नवंबर को आयोजित राजपूत राजपत्रित अधिकारी कार्यशाला को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि यदि हम हमारे इतिहास से उदाहरण देखें तो हमको पता चलेगा कि भगवान राम जब रावण के साथ में युद्ध करने जाते हैं तब उनके पास में किसी प्रकार की प्रशासनिक शक्ति नहीं होती है लेकिन उन जंगलों में भी सुग्रीव जैसे जो प्रशासक हैं उनसे वह शक्ति प्राप्त करते हैं। भगवान श्री कृष्ण महाभारत का युद्ध करते हैं और उस युद्ध में भी अनेक राजाओं से उस प्रकार की प्रशासनिक शक्ति लेकर उस सेना को संगठित करते हैं। कहीं भी हम चले जाएं, उस शक्ति की आवश्यकता होती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपना काम कर रहा है लेकिन संघ की जो शक्ति है वह बाहर से दिखाई नहीं देती है। संघ को आप देखेंगे तो आपको खेल नजर आएगा, सहगीत नजर आएंगे, आपको एक अनुशासन नजर आएगा लेकिन क्योंकि सामान्य व्यक्ति का यह भाव होता है कि कुछ त्वरित परिणाम दिखाई दें, इसलिए इस प्रकार के जो काम वर्तमान में हम कर सकते हैं उसके लिए भी आनुषंगिक संगठन बनाकर प्रयास किया जा रहा है। हम अपनी शक्ति का किस प्रकार से सदुपयोग कर सकते हैं, उसी के लिए ऐसी कार्यशालाओं को आयोजित किया जा रहा है ताकि ऐसे व्यक्तियों को छांटा जाए, जिनके माध्यम से उस शक्ति का लाभ पूरे समाज को मिले। यहां केवल राजपूत समाज की बात नहीं है क्योंकि हम क्षत्रिय की बात करते हैं और क्षात्रधर्म केवल अपनी जाति की बात नहीं करता, केवल अपने धर्म की बात नहीं करता, क्षत्रिय तो वह है जिसने अपने लिए नहीं, अपने परिवार के लिए नहीं, अपने गांव के लिए नहीं, केवल अपने राष्ट्र के लिए भी नहीं, बल्कि प्राणिमात्र तक के लिए अपने जीवन की बलि दी है। हमारे ऐसे पूर्वजों का खून हमारी शिराओं में दौड़ रहा है, इसलिए हम आज इस कार्यशाला से यही संदेश लेकर जाएं कि जो शक्ति हमने अर्जित की है उसको क्षात्रधर्म के अनुकूल,

क्षत्रियत्व के अनुकूल इस प्रकार से प्रयोग करें जिससे अपने परिवार को, अपने गांव को, अपने राष्ट्र को और पूरी मानवता को हम लाभान्वित करें।

'लोक सेवाएं, लोक हित एवं नया भारत' विषय पर राजस्थान से संबद्ध राजपूत राजपत्रित अधिकारियो की यह कार्यशाला श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में सम्पन्न हुई। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम में हमने अनेक विचारों को सुना लेकिन क्या जितना सुना उसको याद रखना या उसको दिमाग में बिठाना ही पर्याप्त है? क्या उसके लिए कुछ करना नहीं है? पूज्य तन सिंह जी ने कहा है कि विचार चाहे आप कितने ही संग्रह कर लो और कितने ही सुंदर से सुंदर विचार हों, जब तक उनको क्रियान्वित नहीं करेंगे तब तक वह किसी काम के नहीं है तो जो विचार आपने यहां सुने हैं उन विचारों को अपने कर्म में परिवर्तित करना है। इसलिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के कार्य के बारे में जो आपने समझा है उस समझ को लगातार क्रियान्वित करने में लगे रहिए। उन्होंने समाज में पारिवारिक भाव के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि मान लीजिए किसी परिवार में एक सदस्य अधिकारी है और वह बहुत ही अच्छा अधिकारी है। सभी जगह उसकी प्रशंसा होती है, वह अपना दायित्व बहुत बढ़िया ढंग से निभाता है लेकिन उस दायित्व को निभाने में इतना व्यस्त हो गया कि घर में उसकी माता बीमार है तो भी उसको पता नहीं। जब उसको कहा जाता है कि माता जी बीमार है उनका कुछ इलाज करवाइए तो वह उत्तर देता हो कि आप लोग कोई कर सकते हो तो करो, मेरे को फुर्सत नहीं है। क्या हम ऐसे अधिकारी बनना चाहते हैं? राजपूत समाज हमारी मां है। आज हमारी वह माता, वह राजपूत समाज बीमार है। क्या उस बीमारी के बारे में हम कुछ सोचेंगे नहीं? हमारी दुष्प्रवृत्तियों को

दूर करने के बारे में कुछ सोचेंगे नहीं? समाज में हम क्या सहयोग कर सकते हैं जिससे कि हमारा समाज आगे बढ़े, जिससे कि हमारा समाज विकसित हो, इस बारे में सोचेंगे नहीं और सोचेंगे भी तो क्या सोच कर ही रुक जाएंगे, उसको क्रियान्वित नहीं करेंगे? क्रियान्वित करना जरूरी है। इसलिए अगर हमको सपूत बनना है इस जाति का, तो जो हमारे मन में अच्छे विचार आए हैं, उन विचारों को क्रियान्वित करने में तुरंत लग जाना चाहिए, उस में देरी नहीं करनी चाहिए। मौसम विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह ने क्षत्रिय के स्वाभाविक प्रशासनिक गुणों के बारे में बताया और जनसेवा में समर्पण के भाव की बात कहते हुए समन्वय स्थापित कर लगातार ऐसी कार्यशालाएं आयोजित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय लोकसेवक जनसेवा के प्रति समर्पण, सत्यनिष्ठा, आचरण के उच्च मानक, निष्पक्षता, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति और वस्तुनिष्ठता के सिद्धांतों के पालन कर्ता के रूप में पहचाना जाता है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य एवं मान्यताओं को यदि लोकसेवक आत्मसात करें तो वे अपने कार्य का बेहतर निष्पादन कर सकेंगे। फाउंडेशन को सुदृढ़ करने से समाज सशक्त होगा, यह बात निश्चित है। उन्होंने इस कार्यशाला के उपरान्त अधिकारियों के सहयोग से फाउण्डेशन द्वारा भविष्य में करणीय के लिए 5 सूत्रीय एजेंडा की विस्तार से जानकारी दी। सेवानिवृत पुलिस महानिदेशक प्रकाश सिंह ने 'लोकहित मे पुलिस व प्रशासन की भूमिका' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि वर्तमान में पुलिस व प्रशासन लोकहित में कितना कार्य कर रहे हैं, यह विचारणीय है। जिस अधिकारी वर्ग को स्टील फ्रेम कहा जाता था, वह अब प्लास्टिक फ्रेम हो गया है। आजकल अपनी नौकरी बचाने की बात पहले आती है, कर्तव्य पालन की बात बाद में आती है। लेकिन मेरा ऐसा अनुभव है कि यदि हम अपने कर्तव्य का पालन करें तो ईश्वर हमारी रक्षा करते हैं। आज के अधिकारी लोकहित से अधिक नेताओं और पार्टियों के हित में कार्य कर रहे हैं। ऐसे व्यक्ति और ऐसे पद पर लानत है। इसीलिए प्रशासन से जनता का मोहभंग हो रहा है। आप सब लोकहित को अपना सर्वोच्च आदर्श मानकर के कार्य करिए, ऐसा मेरा आग्रह है। हमारी कार्य-संस्कृति में जो विकृतियां आ गई हैं उन्हें दूर करने के लिए पहले हमें अपने आप को ठीक करना पड़ेगा। परिवार से, विद्यालयों से इसको ठीक करने की शुरूआत करनी पड़ेगी। माता-पिता को अपने दायित्व का पालन करना पड़ेगा। माताओं से मैं कहूंगा कि आप बच्चों को अच्छे संस्कार दीजिए। आज संस्कारों की बहुत कमी है। आज हमारे घरों में गीता तक नहीं है, कैसे हमारे संस्कार निर्मित होंगे? हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार जिन पर हम हमेशा गर्व करते हैं, हमसे खोते जा रहे हैं। सभी ओर अनाचार फैला हुआ है। इसलिए हमारे संस्कार, हमारे मूल्य कहां जा रहे हैं, उसको पहले ठीक करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार पिता से मैं कहूंगा कि बच्चों को शिक्षा दीजिए। आज राजपूत समाज धीरे-धीरे शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ता जा रहा है। मेरा निवेदन है कि समाज के छात्रों के लिए संगठित रूप से भी कार्य किया जाना चाहिए। प्रतिभावान छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था भी की जानी चाहिए। जब तक हमारे बच्चे आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक समाज वास्तविक प्रगति नहीं कर पाएगा। साथ ही हमारी युवा पीढ़ी को खेल के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने और प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। पूर्व महानिदेशक पुलिस राजस्थान अजीत सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आजकल जब भी लोग नैतिकता पर बोलते हैं तो काफी खोखला सा लगता है। लेकिन यहां आने के बाद श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य और उसके द्वारा किए जा रहे प्रयास के बारे में जो जानकारी हासिल हुई, उससे स्पष्ट है कि संघ पूरी तरह से समाज को सुसंस्कारित करने के लिए प्रयासरत है और यह प्रयास कुछ रंग भी ला रहे हैं लेकिन यह एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के नतीजे आज नहीं लेकिन पांच, दस, पंद्रह साल बाद समाज में अवश्य नजर आएंगे। यह जो प्रक्रिया है, हो सकता है कि कई लोग समझें कि इसकी क्या उपयोगिता है लेकिन मेरा यह मानना है कि समाज में बहुत परिवर्तन आ रहा है और उसकी गति बहुत तेज है। उन्होंने बताया कि प्रशासन और पुलिस के लिए अब पहले जैसी स्थिति नहीं रही है। अब वह स्थिति आ रही है जब प्रशासन के हर एक्शन पर सवाल किया जाएगा और जब सवाल किया जाएगा तो आप की जवाबदारी भी बनेगी। यहीं आपके संस्कार और आपकी नैतिकता आपके काम आएगी। आप लोग भी जब सेवा में आए थे तब आपके भी कुछ आदर्श होंगे कि किस तरह से आप अपने क्षेत्र में परिवर्तन लाएंगे। लेकिन समय के साथ आपको कई ऐसी सलाह मिली होगी कि आप प्रैक्टिकल रहिए, इस तरह के आदर्शवाद से आप कहां तक चलोगे, आप को दरकिनार कर दिया जाएगा आदि। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

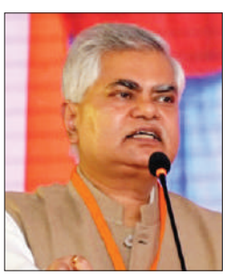

सिरोही में प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

महाराव सुरताण क्षत्रिय शिक्षण संस्थान के तत्वावधान में सिरोही जिले के राजपूत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह एवं स्नेह-मिलन समारोह 27 नवंबर को राजपूत छात्रावास, अनादरा रोड, सिरोही में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में राजपूत समाज के सैंकड़ों समाजबंधुओं व मातृशक्ति की उपस्थिति रही। मुख्य अतिथि सिरोही के पूर्व नरेश रघुवीरसिंह देवड़ा ने महाराव सुरताण के शौर्यपूर्ण जीवन और सिरोही के गौरवपूर्ण इतिहास पर प्रकाश डाला। संस्थान के अध्यक्ष समरवीरसिंह देवड़ा ने दूर-दराज से आए अतिथियों का आभार व्यक्त किया। पूर्व विधायक समरजीतसिंह दासपा ने सभी समाजों को साथ लेकर चलने एवं व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़ने की बात कही। भाजपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य रविंद्रसिंह बालावत ने शिक्षा क्षेत्र में निरंतर प्रगति की आवश्यकता जताते हुए रूढ़ियों को त्यागने का आह्वान किया। कांग्रेस के पूर्व प्रदेश सचिव करणसिंह उचियारड़ा ने बालिका शिक्षा के महत्त्व को समझने व संगठित होकर आगे बढ़ने की बात कही। छात्र नेता रविंद्रसिंह भाटी ने कहा कि सभी समाजों को साथ लेकर चलने से ही हम अपने धर्म का पालन कर सकते हैं। लोगों की समस्याओं को दूर करने के लिए संघर्ष करना हमारा कर्तव्य है। पूर्व जिला प्रमुख चंदनसिंह देवड़ा, कांग्रेस पूर्व प्रदेश सचिव गुमानसिंह देवड़ा, भाजपा जिला उपाध्यक्ष दिलीपसिंह मांडाणी, कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष कुलदीपसिंह पालड़ी, डा. कर्नल अभयसिंह देवड़ा देलदर, महिपालसिंह देवड़ा वेराजेतपुरा, सीआई देवेंद्रसिंह देवड़ा मोचाल, भवानीसिंह भटाणा, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य मांगूसिंह बावली, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी गणपतसिंह देवड़ा वेरापुरा, रामसिंह चारणीम एवं गोविंद कंवर आदि वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे और मिलकर समाज और राष्ट्र हित में कार्य करने की बात कही। कार्यक्रम में आदित्यप्रतापसिंह देवड़ा रहुआ, अजीतसिंह देवड़ा कालंद्री, केपी सिंह देवड़ा डबाणी, समाजसेवी रतनसिंह तूरा, समुंदरसिंह नोसर, शिवगंज प्रधान ललिता कंवर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शिक्षा, खेलकूद, प्रतियोगी परीक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समाज की प्रतिभाओं को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। छात्रावास में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वालों को भी सम्मानित किया गया। मंच संचालन डा. उदयसिंह देवड़ा डिंगार, नारायणसिंह बावली, इंदरसिंह मनोरा एवं विक्रमसिंह विरोली ने संयुक्त रूप से किया।

डिग्गी में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की अजमेर-टोंक जिला समिति की एक दिवसीय कार्यशाला डिग्गी स्थित राजपूत धर्मशाला में 12 नवंबर को संपन्न हुई। बैठक में अजमेर व टोंक जिले में परस्पर सहयोग एवं सामंजस्य द्वारा फाउंडेशन के कार्यों को गति देने हेतु कार्ययोजना पर चर्चा की गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया ने फाउंडेशन के उद्देश्य को समझाया और समाज के युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने के लिए कार्य करने की बात कही। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउन्डेशन के जिला प्रभारी देशराज सिंह लिसाड़ीया ने फाऊंडेशन की कार्ययोजना के विभिन्न बिंदुओं पर कैसे कार्य किया जा सकता है, इस पर सभी सहयोगियों के साथ विस्तृत चर्चा की, साथ ही आगामी कार्यों की रूपरेखा भी बनाई। कार्यक्रम में हिम्मत सिंह धोली, जसवंत सिंह डोराई, गिरधर सिंह छाबड़िया, जितेंद्र सिंह पथराज, अजय सिंह बावड़ी, धन सिंह बावड़ी, रघुवीर सिंह आखथड़ी, चंद्रशेखर सिंह देवल, सूर्यप्रताप सिंह आटोली, चंद्रवीर सिंह लावा, दीनदयाल सिंह कुक्कड़, भंवर सिंह खिरिया सहित अनेकों सहयोगी उपस्थित रहे।

समारोहपूर्वक मनाई कर्नल प्रेम सिंह जी अड़वड़ की जयंती

नागौर जिला मुख्यालय पर स्थित श्री अमर राजपूत छात्रावास में कर्नल प्रेम सिंह जी अड़वड़ की जयंती 27 नवंबर को समारोह पूर्वक मनाई गई। इस दौरान राजपूत समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए समता राम जी महाराज ने कहा कि इतिहास से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। हमारे पूर्वजों ने जो मार्ग हमें बताया है उस पर चलने में ही हमारा कल्याण है। हमें अपने इतिहास को संरक्षित करने की भी आवश्यकता है और उसके लिए हम सबको एक होकर प्रयास करना पड़ेगा। उन्होंने सभी से राजनीतिक क्षेत्र में जागृति लाने के लिए कार्य करने की भी बात कही। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के बारे में बताते हुए कहा कि शास्त्रों में जो 'मनुः भवः' की बात कही गई है उसको समझने और चरितार्थ करने की जरूरत है। हमें अपने भीतर की मनुष्यता को जागृत करना ही होगा, अन्यथा हमारा जीवन व्यर्थ जाएगा। संघ अपनी शाखा और शिविरों के माध्यम से हमारे भीतर की मनुष्यता को जागृत करता है। अजीत सिंह भाटी ने कर्नल प्रेम सिंह जी अड़वड़ का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। श्री अमर एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष विक्रम सिंह अड़वड़ ने बताया कि कर्नल प्रेम सिंह जी ने आज से सात दशक पहले ही शिक्षा के महत्व को समझते हुए नागौर जिला मुख्यालय पर श्री अमर राजपूत छात्रावास के निर्माण की पहल की। इस छात्रावास में समाज के हजारों छात्रों ने शिक्षा और संस्कार प्राप्त किए हैं। प्रताप सिंह कालवी ने समाज की युवा पीढ़ी से आत्मनिर्भर बनकर परिवार और समाज को सशक्त करने का आह्वान किया। मारवाड़ राजपूत सभा भवन के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा ने सामाजिक समरसता और एकता को लक्ष्य बनाकर एक दूसरे के सहयोग से कार्य करने की बात कही। अजीत सिंह चांदारूण ने 4 दिसंबर को डेगाना में आयोजित होने वाली कल्याण सिंह जी कालवी की जयंती में भाग लेने हेतु सभी से निवेदन किया। किशोर सिंह बालवा ने कर्नल प्रेम सिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताए मार्ग पर चलने की बात कही। मातृशक्ति की ओर से केशवी शेखावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सुसंस्कारित माता ही अपनी संतान को भी संस्कारित कर सकती है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों के माध्यम से हो रहे संस्कार निर्माण के कार्य में हम सभी को सहभागी बनना चाहिए। संतोष कवर चावंडिया ने बालिका शिक्षा को अधिकाधिक प्रोत्साहित करने की बात कही एवं डिंपल कंवर हरीमा ने महिला सशक्तिकरण के संबंध में अपने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान कल्याण सिंह कालवी जयंती का पोस्टर विमोचन भी किया गया। छात्रावास के सचिव देवेंद्र सिंह सेनणी ने छात्रावास का विगत वर्ष का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और आगामी दस वर्षों के लिए कार्य योजना भी सामने रखी। कार्यक्रम में नागौर के विभिन्न छात्रावासों की कार्यकारिणी के सदस्य, छात्रावासों के पूर्व एवं वर्तमान छात्र तथा शहर में रहने वाले समाजबंधु मातृशक्ति के साथ सम्मिलित हुए।

जयपुर स्थापना दिवस पर संस्थापक जयसिंह जी को दी श्रद्धांजलि

18 नवंबर को गुलाबी नगरी जयपुर के स्थापना दिवस पर श्री राजपूत सभा जयपुर की कार्यकारिणी के सदस्यों ने शहर के संस्थापक सवाई जय सिंह जी की स्टेच्यू सर्किल स्थित प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनके प्रति कृतज्ञता जताई। इस दौरान कार्यकारिणी के सदस्यों ने नगर निगम ग्रेटर की जयपुर के संस्थापक के प्रति उदासीनता पर रोष भी जताया। सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने कहा कि स्थापना दिवस केवल जयपुर के लिए ही नहीं बल्कि प्रदेश और देश के लिए भी गौरवमय उत्सव का दिवस है। लेकिन यह दुख की बात है कि जयपुर नगर निगम ग्रेटर एवं प्रशासन ने जयपुर के संस्थापक की स्मृति में किसी भी प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन नहीं किया। उनकी इस उदासीनता ने जयपुर वासियों की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। इस अवसर पर पूर्व मंत्री अरुण चतुर्वेदी, प्रताप सिंह राणावत, बलवीर सिंह हाथोज, धीर सिंह शेखावत, जोगेंद्र सिंह सांवरदा, नटवर सिंह रॉयल, मूल सिंह शेखावत, लोकेंद्र सिंह लोटवाडा, सुरेंद्र सिंह नरूका सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मुंबई की शाखाओं में मनाया अधिकतम संख्या दिवस

20 नवंबर को मुंबई प्रांत की तनेराज शाखा (गिरगांव चौपाटी) और नारायण शाखा (भायंदर) में अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया जिसमें शहर में रहने वाले सैकड़ों समाजबंधु सम्मिलित हुए। तनेराज शाखा में 204 संख्या रही एवं प्रांत प्रमुख रणजीत सिंह आलासन सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भायंदर में 138 स्वयंसेवक शाखा में उपस्थित रहे।

संपादकीय

प्रगतिशीलता के नाम पर संकुचितता का पोषण

विगत दिनों दिल्ली में घटी एक आपराधिक घटना पूरे देश में चर्चित हुई जिसमें अविवाहित जोड़े (लिव इन) के रूप में एक युवक के साथ रहने वाली युवती की नृशंस हत्या उसके युवक साथी द्वारा कर दी गई। चूंकि युवक और युवती अलग-अलग सम्प्रदाय से थे इसलिए इसे एक सांप्रदायिक दृष्टिकोण से देखा जा रहा है जो एक अलग विषय है लेकिन केवल सांप्रदायिक स्वरूप से इसका विवेचन कर केवल इसका राजनीतिक उपयोग मात्र करना इस घटना के मूल में उपस्थित समस्या से मुंह मोड़ना है। समाचार माध्यमों से लेकर सोशल मीडिया तक पर यह एक बड़ा मुद्दा बना, लेकिन धार्मिक कट्टरता से भरी प्रतिक्रियाओं के शोर में ऐसी घटनाओं के मूल में छिपे वे प्रश्न उभर ही नहीं पाए जिन पर विमर्श भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था को विकृत करने वाले तत्वों को रोकने के लिए आवश्यक है। यह भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि विभिन्न मुद्दों और घटनाओं पर यह उद्वेलित तो होती है लेकिन यह उद्वेलन छिछली प्रतिक्रियाएं देकर ही शांत हो जाता है और इन मुद्दों और घटनाओं में निहित आधारभूत समस्याओं को पहचानने और उनके हल खोजने का चिंतन उभर ही नहीं पाता। उपरोक्त घटना के बाद भी ऐसा ही हुआ। वास्तव में यह घटना कोई इकलौती घटना नहीं है बल्कि हमारे समाज में ऐसी अनेकों घटनाएं प्रतिदिन घट रही हैं। ये घटनाएं हमारी पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के छिन्न-भिन्न होने का प्रमाण है और सांस्कृतिक विखंडन की इस प्रक्रिया में जाने-अनजाने देश का राजनीतिक और तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवी वर्ग भी बड़ी भूमिका निभा रहा है।

परिवार भारतीय सामाजिक व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है और उस परिवार के निर्माण का आधार विवाह है। आज पाश्चात्य संस्कृति और बाजारीकरण की शक्तियों के प्रभाव में विवाह की भारतीय मान्यताओं और सैद्धांतिक आधारों पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं और इन आक्रमणों के परिणाम स्वरूप विवाह जैसी पवित्र संस्था विकृत होकर बिखर रही है। इसी से परिवार टूट रहे हैं और उनके टूटने से सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था भी नष्ट होने की ओर अग्रसर हो रही है। आधुनिकता और प्रगतिशील सोच के नाम पर आज विवाह को केवल दो व्यक्तियों की पसंद मानने की विचारधारा तेजी से प्रसार पा रही है और सिनेमा, पत्र-पत्रिकाएं, सोशल मीडिया आदि तो इसके प्रसार के माध्यम बन ही रहे हैं, देश का नीति-निमार्ता वर्ग और बुद्धिजीवी भी इसी दृष्टिकोण से प्रभावित दिखाई देते हैं। किंतु भारतीय संस्कृति के मूल्यों की दृष्टि से देखें तो वास्तव में यह प्रगतिशीलता नहीं बल्कि संकुचितता है। हमारी संस्कृति में विवाह का आधार दो व्यक्तियों का आपसी शारीरिक आकर्षण मात्र नहीं है, बल्कि विवाह दो परिवारों को स्थायी रूप से जोड़ने, पीढ़ियों से चले आ रहे सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को स्वीकारने और सहेजने, जीवन के सभी दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने हेतु आधार निर्मित करने का माध्यम है। विवाह केवल दो व्यक्तियों की सहमति नहीं बल्कि दो परिवारों की सहमति का विषय है जिनमें विवाह बंधन में बंधने जा रहे युवक-युवती की सहमति भी सम्मिलित है। यह सहमति अनुभवहीन उम्र में पनपे अस्थायी आकर्षणों पर नहीं बल्कि परिवार, समाज और संस्कृति के प्रति विश्वास और दायित्व बोध से जन्मती है, अतः यह अधिक स्थायी, गहरी और परिपक्व सहमति है। इसीलिए इस सहमति के आधार पर निर्मित विवाह के बंधन अटूट रहते हैं, साथ ही उन्होंने परिवार को सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का केंद्र भी बनाए रखा है। यह विडंबना ही है कि आज का तथाकथित प्रगतिशील वर्ग विवाह को दो व्यक्तियों की निजी पसंद का मामला बताकर प्रेम विवाह, लिव इन, समलैंगिकता आदि की वकालत करके इनके निर्बाध प्रसार को समाज का विकास मान रहे हैं और देश की वर्तमान व्यवस्था भी इसमें सहयोगी ही बन रही है। यह तो सामान्य समझ की बात है कि जो युवा अपने माता-पिता, अपने समाज और अपनी संस्कृति के प्रति अपने दायित्व को नहीं निभाते, वे विवाह की पवित्रता को समझकर उसके दायित्वों को भला कैसे निभा पाएंगे? पारिवारिक दायित्वों को त्यागकर, परंपराओं और सांस्कृतिक मान्यताओं के विपरीत जाकर किए गए विवाह के सफल होने की संभावना न्यून ही है और यदि ऐसा विवाह बना भी रहता है तो उससे निर्मित परिवार भी आत्मकेंद्रित और सीमित ही होगा। ऐसे परिवार से भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्शों और मूल्यों को धारण करने, उन्हें संरक्षित और संवर्द्धित करके अगली पीढ़ी को सौंपने की आशा भी नहीं की जा सकती। इसलिए प्रगतिशीलता के नाम पर व्यक्ति को समाज व परिवार से विमुख बना कर केवल अपरिपक्व आकर्षण के आधार पर विवाह को प्रोत्साहन व्यक्ति की संकुचितता को ही पोषण प्रदान करना है। बुद्धिजीवियों और नीति-निमार्ताओं को यह विचार अवश्य करना चाहिए कि इस प्रकार से युवा पीढ़ी को संकुचित सोच का शिकार बना कर वे भारतीय समाज और संस्कृति को किस दिशा में ले जा रहे हैं। युवाओं में बाजारीकरण की संस्कृति से प्रभावित होकर जन्मा आकर्षण तो केवल स्वार्थ और भोग से भरे परिवार को ही पनपा सकता है और वैसा ही आज हो रहा है।

इस संकुचितता को फैलने से रोकना हम सभी का सामूहिक दायित्व है और इसलिए आज युवा पीढ़ी की ऊर्जा को उन आदर्शों की ओर प्रवाहित करने की आवश्यकता है जिनकी ओर बढ़कर वे प्रेम के उदात्त स्वरूप को पहचान सके। ऐसा उदात्त प्रेम ही परिवार को कर्त्तव्य, धर्म और संस्कृति का अधिष्ठान बना सकता है। इस क्षेत्र में नेतृत्व करने का दायित्व हमारे समाज को ही निभाना होगा क्योंकि अन्य क्षेत्रों की भांति इस क्षेत्र में भी उच्चतम आदर्श क्षत्रिय समाज ने ही स्थापित किए थे। लौकिक संबंधों में अलौकिक प्रेम की स्थापना करने वाली सतीत्व की धारणा को हमारी ही माताओं ने साकार किया था। युद्ध में अपने पति, अपने पुत्र और अपने भाई को तिलक लगाकर मृत्यु से सामना करने के लिए विदा करने की परंपरा उसी समाज में विकसित हो सकती थी जिसमें प्रेम और दायित्वबोध का शाश्वत गठबंधन रहा हो। इसीलिए आज फिर से हमें त्याग और प्रेम की श्रेष्ठतम मयार्दाओं को अपने व्यक्तित्व में धारण करके संसार को राह दिखाने का दायित्व निभाना होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे समाज के युवक-युवतियों को उन्हीं मयार्दाओं का पाठ पढ़ा रहा है जिससे वे भारतीयता के वास्तविक मूल्यों और आदर्शों के सच्चे संवाहक बनें।

मेवाड़ का गुहिल वंश

महाराणा मोकल के बाद उनका ज्येष्ठ पुत्र कुंभकर्ण (कुंभा) वि.सं. 1490 में मेवाड़ का शासक बना। शासक बनते ही कुंभा ने राजद्रोहियों अपने पिता के हत्यारों को दंडित करने एक सेना आदिवासी क्षेत्र में छिपे चाचा व मेरा के विरुद्ध भेजी। रावल रणमल इस सेना के साथ चाचा व मेरा के छिपे स्थल की पहाड़ियों की ओर गया। प्रारम्भ में किसी पुरानी बात को लेकर भीलों ने रणमल का असहयोग किया। परन्तु बाद में भीलों और रणमल में समझौता हो गया और भीलों के सहयोग से रणमल ने चाचा व मेरा के छिपे स्थल पर धावा बोला। चाचा व मेरा तो युद्ध में मारे गए परन्तु महपा पंवार व चाचा का पुत्र एका वहां से बच निकल कर मांडू (मालवा) के सुलतान के पास चले गए। महाराणा कुंभा के अल्पायु होने व चूडा, अज्जा की अनुपस्थिति में राव रणमल ने राज्य के प्रमुख पदों पर अपने विश्वस्त राठौड़ सरदारों की नियुक्ति कर दी, जिससे चूंडा के भाई सहावदेव व अन्य मेवाड़ी सरदारों का विरोध राव रणमल से बढ़ता गया। राव रणमल ने षड्यंत्र रचकर राघवदेवी की हत्या करवा दी। राघवदेव की हत्या और राठौड़ों के बढ़ते प्रभाव में महाराणा कुंभा भी राव रणमल के प्रति शंकालु हो उठे, इसी दौरान मल्या पंवार व एका भी महाराणा कुंभा के पास आ गए और अपने अपराधों के लिए क्षमा याचना की, महाराणा ने दोनों को क्षमा करते हुए सेवा में रख लिया। महाराणा कुंभा की माता सौभाग्यदेवी राव रणमल की महत्वाकांक्षा और उनके कार्यों से शंकित हो उठी, अपने पुत्र कुंभा से विचार-विमर्श कर उन्होंने चूंडा को मेवाड़ वापिस बुलावे का निश्चय किया। कुंभा के आग्रह पर चूंडा और अज्जा मेवाड़ आ गए। चूंडा के मेवाड़ आने से जहां मेवाड़ी सरदारों का मनोबल बढ़ा वहीं राव रणमल का प्रभाव कम होने लगा। सावधानी की दृष्टि से राव रणमल ने अपने पुत्रो जोधा, कांघल आदि को किले से नीचे तलहटी में भेज दिया और कहा कि मेरे बुलावे पर ही ऊपर आना। राव रणमल के कुछ कृत्यों से चित्तौड़ में उनका विरोध बढ़ता गया जिसके परिणाम स्वरूप एक रात्रि राव रणमल की दासी भारमली द्वारा उन्हें अत्यधिक मद्यपान करवाया। बेसुध राव रणमल को भारमली ने उनकी पगड़ी को उनकी शैय्या के साथ बांध दिया इसके उपरांत महपा पंवार अपने सैनिकों के साथ अंदर आया और रणमल पर शस्त्र प्रहार किए। वृद्ध रणमल प्रहार लगते ही खाट सहित खड़े हो गए और बंधे होने के बाद भी दो-तीन का मारकर वीरगति को प्राप्त हो गए यह देखकर राव रणमल के डोम के किले की दीवार पर खड़े होकर उच्च स्वर में देख दोहा कहा-

चूंडा अजमल आषिया, मांडू हूं धक अण।
जोधा रणमल मारिया, भाग सके तो भाग।।

ये शब्द सुनते ही तलहटी वालों ने जान लिया कि राव रणमल मारे गए है। अपने पिता के मारे जाने पर जोधा अपने भाइयों व साथियों सहित मारवाड़ की ओर भागा। चूंडा ने सेना सहित उनका पीछा किया रास्ते में दोनों सेनाओं के मध्य कई बार झड़प हुई। चूंडा ने मंडोर पर अधिकार कर लिया, राव जोधा व मेवाड़ के मध्य कालान्तर में वापिस संबंध सामान्य हुए और ये झगड़ा समाप्त हुआ। **(क्रमशः)**

संदर्भ (1) उदयपुर राज्य का इतिहास (ओझा जी)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	24.12.2022 से 27.12.2022 तक	**नीमच,** मध्यप्रदेश।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2022 से 28.12.2022 तक	**रामसर,** बाड़मेर।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 28.12.2022 तक	**दुजोद,** सीकर।
03.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**पुंदलसर,** बीकानेर।
04.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**आलोक आश्रम,** बाड़मेर।
05.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**वंदे मातरम स्कूल,** पाली।
06.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**आसकन्द्रा,** जैसलमेर
07.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**तोसनिवाल धर्म शाला धनौप माता मन्दिर परिसर,** धनौप जिला भीलवाड़ा (केकड़ी से बिजयनगर गुलाबपुरा प्राईवेट बस मार्ग पर वाया फुलिया कलां वाली बस से माता जी मन्दिर मार्ग पर उतरें। मेवाड़ वागड़ हाड़ौती से आने वाले वाया शाहपुरा भीलवाड़ा होकर फुलियाकला पुलिस स्टेसन के सामने उतरें । वहां से बिजयनगर जाने वाली प्राईवेट बस पकड़कर मन्दिर मार्ग पर उतरें । अजमेर से आने वाले बिजयनगर रेल्वे फाटक से धनौप होकर जाने वाली केकड़ी की बस से पहुंचे। जयपुर से आने वाले वैशाली डिपो बस जयपुर भीलवाड़ा वाया केकड़ी फुलिया से पुलिस स्टेशन उतरें व प्राईवेट बस से मन्दिर उतरें । **संपर्क सूत्र** 9602246116, 9950286101, 9799278932
08.	मा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**जयमल कोट पुष्कर,** अजमेर **संपर्क सूत्र** 9414005449, 9749922222, 9413040742
09.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.12.2022 से 31.12.2022 तक	**मंदसोर,** मध्यप्रदेश।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। **दीपसिंह बैण्यकाबास,** शिविर कार्यालय प्रमुख

श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन

श्री प्रताप युवा शक्ति की अजमेर टीम द्वारा समाज के विद्यार्थियों के लिए एकदिवसीय कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम केकड़ी के श्री जगदंबा छात्रावास में 22 नवंबर को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महाराणा प्रताप यूनिवर्सिटी उदयपुर के वाइस चांसलर डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़ व गीतांजलि इंस्टीट्यूट उदयपुर के कैरियर डेवलपमेंट सेल के विभागाध्यक्ष डॉ. अरविंद सिंह पैमावत ने बालकों को अलग अलग क्षेत्रों में कैरियर निर्माण की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी, साथ ही अपने अनुभव भी साझा किए। केकड़ी के शक्ति कंपीटिशन क्लासेज के निदेशक भवानी सिंह ने सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त करने के लिए तैयारी के संबंध में बताया। कार्यक्रम के अंत में पूर्व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जसवंत सिंह डोराई ने सभी अतिथियों का आभार ज्ञापित किया। शंकर सिंह गौड़, गोपाल सिंह कादेड़ा, भगवान सिंह देवगांव, पृथ्वी सिंह सापण्दा, नरेंद्र सिंह डोराई, विक्रम सिंह नयाबास, हनूत सिंह सावर, घिसू सिंह रामपाली, देवव्रत सिंह डोराई सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

जोधपुर में राजपूत अधिवक्ता स्नेहमिलन संपन्न

राजपूत अधिवक्ताओं का वार्षिक स्नेहमिलन कार्यक्रम जोधपुर स्थित मारवाड़ राजपूत सभा भवन में 20 नवंबर को आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान समाज के अधिवक्ताओं की एकता पर बल देते हुए कानूनी मामलों में समाज को सबल बनाने के संबंध में चर्चा हुई। अधिवक्ताओं की समिति बनाने तथा प्रत्येक वर्ष नवीन कार्यकारिणी का गठन करने का प्रस्ताव भी रखा गया। हनवंत सिंह बालोत, लाल सिंह जाखणियां, दौलत सिंह निम्बला, दिलीप सिंह उदावत, कल्याण सिंह राठौड़, देवेंद्र सिंह महलाना, शंकर सिंह खंगारोत, प्रहलाद सिंह भाटी व मानवेंद्र सिंह भाटी ने कार्यक्रम को संबोधित किया। वरिष्ठ अधिवक्ता चैन सिंह बैठवास ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में सभी को यथार्थ गीता पुस्तक का निशुल्क वितरण भी किया गया।

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलखा हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

राजपूताना विद्युत क्लब जयपुर का दीपावली स्नेहमिलन संपन्न

राजस्थान के ऊर्जा विभाग में कार्यरत समाजबंधुओं का दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम 13 नवंबर को फतेह निवास गार्डन झोटवाड़ा, जयपुर में एन.एस.नाथावत (मुख्य कार्मिक अधिकारी) और वाई.एस.राठौड़ (मुख्य लेखा नियंत्रक, जयपुर डिस्कॉम) की उपस्थिति में आयोजित किया गया। बैठक में समाजबंधुओं द्वारा वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में समाज की भूमिका पर चर्चा की गई, साथ ही प्रशासनिक सेवाओं में समाज के घटते हुए प्रतिनिधित्व पर भी चिंतन किया गया। बैठक में विद्युत विभाग की योजनाओं की जानकारी भी दी गई। क्लब द्वारा आगे भी प्रतिवर्ष होली व दीपावली पर इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

नेनावा में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

गुजरात में बनासकांठा प्रांत के नेनावा गांव स्थित प्राथमिक शाला में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 26 से 28 नवंबर तक आयोजित हुआ। प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर के संचालन में संपन्न इस शिविर में कुणघेर, जाडी, वातम, मुली, वलादर, ढीमा, गोला, कपुरडी, लाछीवाड, भाटीप, नेनावा, मांडल, चारडा, राऊता, वरणोसरी, सिया मोटीमहुडी, रामसण, मेसरा, पालडी, राजोडा, थापरोल आदि गांवों के 261 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कुणघेर ने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण हमारे समाज की सभी समस्याओं को हल कर सकता है। समाज की विभिन्न समस्याओं का मूल कारण संस्कार हीनता ही है। इसलिए यहां जिन क्षत्रियोचित संस्कारों का आप में बीजारोपण किया गया है, उन्हें नियमित अभ्यास द्वारा पोषण प्रदान करें और संसार के प्रतिकूल वातावरण से उनकी रक्षा करें। शिविर के दौरान 27 नवंबर को धानेरा, डीसा और दांतीवाड़ा के समाजबंधुओं का पारिवारिक स्नेहमिलन भी संपन्न हुआ जिसमें संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम में वक्ताओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को समाज के लिए संजीवनी के समान बताते हुए संघ के विचार दर्शन को घर-घर तक पहुंचाने की बात कही। शेरसिंह नेनावा ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

संयोगिता राठौड़ हुई सम्मानित

नागौर के कुकनवाली निवासी संयोगिता राठौड़ को पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने पर लाडनूं में जैन विश्व भारती संस्थान की ओर से आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। उन्होंने 'किशोर विद्यार्थियों में सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियों द्वारा व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन' विषय पर शोध किया। भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल ने उन्हें प्रशस्ति पत्र व मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। संयोगिता श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक मेघ सिंह जूलियासर की दोहिती है।

सोजत में स्नेहमिलन संपन्न

पाली प्रांत के सोजत मंडल में श्री कृष्ण गौशाला मांडा में 27 नवंबर को स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें पाली में होने वाले माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तथा मंडल में लगने वाली शाखाओं के संबंध में चर्चा हुई। प्रांत प्रमुख मोहब्बत सिंह धींगाणा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। स्नेहभोज के पश्चात गौशाला परिसर व फतेहराम जी महाराज की समाधि के दर्शन भी समाजबंधुओं ने किए।

अमरजीत सिंह भालनी की एनडीए परीक्षा में 41वीं रैंक

जालौर जिले में भीनमाल के भालनी गांव के निवासी अमरजीत सिंह ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एनडीए 2022 परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 41वां स्थान प्राप्त किया है। अमरजीत सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

प्रो. मदनसिह राठौड़ पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में नामित

प्रो मदनसिह राठौड़ को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर की शासी परिषद में गैर राजकीय सदस्य के रूप में तीन वर्षों के लिए नामित किया गया है। पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र लोक एवं ललित कलाओं के उत्थान और संवर्धन एवं सरंक्षण के लिए केंद्रीय संस्थान के रूप में कार्यरत है। प्रो. राठौड़ वर्तमान में मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में दृश्य कला संकाय में प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं और पूर्व में शासी परिषद राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर और शासी परिषद राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर के सदस्य भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त वे भरतपुर विश्वविद्यालय में कुलपति चयन समिति के सदस्य के साथ साथ प्रदेश के पांच से अधिक विश्वविद्यालियों मे सिंडिकेट, प्रबंध मंडल और चयन समिति के सदस्य और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चित्रकला विषय की पाठ्यक्रम और पुस्तक लेखन समिति के समन्वयक रह चुके हैं। आप बाड़मेर के जागसा गांव के मूल निवासी एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सक्रिय सहयोगी हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

बेईमानी...

फिर कई जगह पर बैठकें होती रही। लोगों ने वादे किए थे कि हम एक रहेंगे। यहां तक कहा था कि आप हमारी चोटी पकड़ के रखना और उन्होंने ही दूसरी जगह कहा कि मैं तो चोटी काट के चला ही जाऊंगा। ऐसे लोगों की हम किस प्रकार से एकता कर सकते हैं और इसीलिए मैं एक नई बात कह रहा हूं - एक बनो लेकिन नेक भी बनो। हमारे संतो ने, हमारे ऋषियों ने, हमारे महापुरुषों ने ऐसी बातें हमको बहुत बताई। विश्व में शांति लाने का बीड़ा भारतवर्ष के लोगों ने ही उठाया था। सारा संसार अंधकार में सो रहा था उस समय प्रकाश की किरण भारत में उठी। आप यह भी सोच सकते हैं कि इसी प्रकाश की एक किरण आप लोगों के हृदय में प्रकाशित हुई है जिससे प्रेरित होकर के श्री प्रताप फाउंडेशन बना। आज देश में लोकतंत्र है और सब लोगों को अपने मत का प्रयोग करना चाहिए, यह सिखाने की हमको जिम्मेदारी दी गई। उसमें कितने सफल हुए, यह तो कह नहीं सकते लेकिन फिर भी उस जिम्मेदारी को निभाया। फिर हमारे बीच में राजनेता आ गए, उन्होंने कहा कि आरक्षण पर भी काम कीजिए। हमने कहा कि यह हमारा विषय नहीं है फिर भी जबरदस्ती हमारे ऊपर थोपा गया। उसका परिणाम कोई बहुत बढ़िया नहीं आया क्योंकि हम अनुभवहीन थे। अब हमको लगता है कि करीब 20-22 साल से हमको कुछ अनुभव हो गया है। कोई हमको बरगला नहीं सकता। हम पहचान जाएंगे सही क्या है, गलत क्या है? आप लोगों ने आज कहा कि आप सब को विश्वास है कि अब हमारी बात सुनी जाएगी, अब एकता स्थापित होगी, अब कोई संकट नहीं रहेगा। यह तुरंत होने वाला काम तो नहीं है लेकिन मैं यह कहता हूं कि शुरू किया हुआ काम कभी खत्म नहीं होता। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि बीज का नाश नहीं होता। यह बीज डाल दिया गया है और इसे पूरे भारतवर्ष में डालने का विचार है। इसीलिए आज के इस कार्यक्रम में मैं आह्वान करना चाहता हूं कि राजस्थान के जिले-जिले में जल्दी-जल्दी इस प्रकार का आयोजन होना चाहिए, फिर पूरे भारतवर्ष में यह विचार फैलाया जाना चाहिए, इसकी आवश्यकता है। अब भी हम यदि केवल अपनी जातियों में, अपने समुदायों में उलझे रहे तो हम ना विकासशील बन सकेंगे, ना हम विकसित हो सकेंगे। आज आप यहां आए हैं तो कुछ महिलाएं आई हैं, बाकी सब पुरुष आए हैं। यह आधा भाग जब तक पीछे रहेगा हमारा काम पूरा नहीं होगा। कम से कम आप आए हैं तो अपनी महिलाओं को, अपने बच्चों को जा करके यह बताएं जरूर कि किस प्रकार का हम काम करके आए हैं? यह जानकारी उनको दें, उनका मत भी जानें ताकि धीरे-धीरे उनका आकर्षण बढ़े। संरक्षक श्री ने आगे बताया कि मंदिरों ने, मस्जिदों ने, गिरजाघरों ने और ऐसे ही मठों ने हमको बांट दिया और उनमें बंटे रहने के कारण बहुत सारी रूढ़ियां हमारे अंदर आ गई। उन रूढ़ियों के कारण यह जातिवाद ज्यादा फैला है। जातियां पहले भी थी, जातियां आज भी है, जातियां सदैव रहेगी। उनको समाप्त करने की आवश्यकता नहीं। वह हमारी पहचान है, हमारे चरित्र की पहचान है, हमारे विचारों की पहचान है, उनको खंडित करने का कभी विचार ना करें। आपने जो यह संकल्प लिया है, कि यदि हम को बुलाया जाएगा तो हम जयपुर भी आएंगे, दिल्ली का भी सोचो, थोड़ा देर से ही सही, लेकिन दिमाग में सपना बड़ा होना चाहिए। सफलता की बात तो मैं नहीं करता क्योंकि गीता सफलता की बात को नकारती है। गीता निष्काम कर्मयोग की बात करती है। हम बिना स्वार्थ के, बिना किसी कामना के श्री प्रताप फाउंडेशन का सहयोग करेंगे तो निश्चित रूप से सब भला होगा, एकता भी आएगी, भलमनसाहत भी आएगी, समरसता भी आएगी, सौहार्द भी मिलेगा। यह जो आंदोलन है, यह आंदोलन पूरे विश्व में फैले, इसकी रूपरेखा हमारे दिमाग में होनी चाहिए। बाहर की जो लड़ाई है, उस पर रोक लगाना इतना आसान नहीं लेकिन अपने आप पर रोक लगाना, अपने आप को नियंत्रण करना यह हमारे बस में है। हम संयमी बनें, अच्छा बोलें, सुंदर बोलें, जो बोलें, वह करें। इस संदेश को ना भूलें कि यह काम हमको करना है, हम ही करेंगे, किसी और के भरोसे नहीं छोड़ेंगे। रोग बहुत गहरा हो गया है, उसको हटाने में समय लगेगा। दवाई देनी पड़ेगी, पथ्य देना पड़ेगा, परहेज भी करना पड़ेगा। समय लगेगा लेकिन यह काम होगा, होगा, होगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि किसानों की समस्याओं के बारे में हमने सुना और उसके बाद समाधान के लिए कई नई बातें भी हम सब ने सुनी। इसके लिए पहले भी बराबर प्रयास अलग-अलग संगठनों के माध्यम से होते रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे, यह बात सरकारों तक भी पहुंचाई जाएगी लेकिन मैं इन विषयों पर पुनः बात करने की बजाय दो बातें कहना चाहता हूं और वह दोनों बातें आपके लिए हैं सरकार के लिए नहीं। वह आपसे मांग है मेरी। पहली बात किसान धरतीपुत्र है, मतलब धरती हमारी माता है। क्या माता को जहर दिया जाता है? धरती माता को हम जहर दे रहे हैं इन केमिकल फर्टिलाइजर से। क्यों नहीं हम इनको बंद कर दें? क्यों नहीं हम पशुपालन प्रारंभ करते, जिनके गोबर को हम काम में ले सकते हैं। यह अगर प्रारंभ करेंगे तो एक-दो साल तक मुश्किल हो सकती है क्योंकि फसल कम होगी, लेकिन उसके बाद इस धरती माता की उर्वरा शक्ति पुनः जागृत होगी। जो अपने गर्भ से हमको अनाज देकर हमारा पालन-पोषण करती है, हम क्या उसके लिए इतना नहीं कर सकते? अगर हम इतना करेंगे तो वापस धरती में उर्वरा शक्ति पैदा हो जाएगी और इस बहाने से पशुपालन भी प्रारंभ हो जाएगा। यह पहली मांग है जो आपसे है, सरकार से नहीं। दूसरी मांग - भारत कभी विश्व गुरु था। आज क्या भारत की वही स्थिति है? आज क्या स्थिति है, हम जानते हैं। घर घर में लड़ाई हो रही है, भाई भाई लड़ रहे हैं, गांव-गांव में कितने ही गुट बने हुए हैं। तो फिर गांव का विकास कैसे होगा, गांव के भले की बात कौन करेगा और यह स्थिति नीचे से लेकर ऊपर तक है और इसी कारण भारत की स्थिति खराब हो रही है। क्या इसके लिए हमारी जिम्मेदारी नहीं बनती? श्री प्रताप फाउंडेशन यह कहता है कि हम सब उस परमपिता परमेश्वर की संतान है तो क्या एक पिता की संतानें आपस में लड़ती रहेंगी? क्यों नहीं यह बात हमें समझ में आती कि हम सब एक हैं? हम आज जातियों में बंटे हुए हो सकते हैं लेकिन वह बंटवारा केवल जाति के नाम से है, इंसानियत के नाम पर कोई बंटवारा नहीं है। इंसानियत के हिसाब से हम सब एक हैं और हम एक होकर रहेंगे। यह यदि हमने अपने परिवार में प्रारंभ किया, हमारे गांव में प्रारंभ किया, प्रदेश में प्रारंभ किया तो पूरे हिंदुस्तान में हो जाएगा और हिंदुस्तान वापस विश्व गुरु बन जाएगा, सोने की चिड़िया बन जाएगा। ये दो छोटी सी मांग है और ये हमारे ऊपर लागू होती है, सरकार का इसमें कोई लेना देना नहीं है। जनप्रतिनिधियों की कोई गरज नहीं है। हमारी खुद की बात है, हम खुद इस बात को समझें और ऐसा करना प्रारंभ करें। उन्होंने कहा कि आपकी जो मांगे हैं, वे आगे पहुंचाई जाएंगी। श्री प्रताप फाउंडेशन कोई अपने नाम की इच्छा नहीं रखता। फाउंडेशन का तो यह भाव था कि कृषि से इतने लोग जुड़े हुए हैं, इतना बड़ा कृषि वर्ग है, अगर हमको सुधार की बात शुरू करनी है तो इस कृषि वर्ग से शुरू करनी चाहिए और इसलिए आपको हमारी भावना पेश की है कि हम सब एक हैं। हम सब मिलकर रहेंगे, हम एक ईश्वर की संतान है, सब भाई हैं और हम आपस में संगठित रहेंगे, इस भाव को आप ज्यादा से ज्यादा प्रसारित करें और भगवान हमको इसमें कामयाबी दें, यही हमारी इच्छा है। संघ के जोधपुर संभागप्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक ने कार्यक्रम की भूमिका बताई और कहा कि श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा इस सम्मेलन का आयोजन किसानों को विशुद्ध गैर-राजनीतिक मंच प्रदान करने व उनकी मांगों को सरकार तक पहुंचाने के लिए किया गया है। के.वी. सिंह चांदरख ने 11 सूत्रीय मांग पत्र का वाचन किया। विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम को संबोधित किया जिनमें दिनेश चारण, गुमाना राम देवासी, तुलछाराम सिवंर, कालुराम भील, सलीम खां मौलवी, देवीसिंह राजपुरोहित, माना राम गर्ग, कल्ला राम पटेल, बाबुलाल पंवार, बलदेव विश्नोई, नागराज गोस्वामी, खिंवराज जांगिड़, खुशालाराम मेघवाल, शशी प्रकाश प्रजापत शामिल रहे। सम्मेलन में अचलानंद गिरी महाराज, नारायण सिंह माणकलाव, हनुमान सिंह खांगटा बाबुसिंह राठौड़, शम्भु सिंह खेतासर, भैराराम सियोल, कमसा मेघवाल, महेंद्र सिंह उम्मेद नगर, बंधन कंवर, शंकराराम मेघवाल, हाथीराम देवासी, मोहनलाल सेन, रामनिवास मंडा, छात्रसंघ अध्यक्ष अरविंद सिंह भाटी, के आर डउकिया, घनश्याम ओझा सहित अनेक जनप्रतिनिधि व गणमान्य जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जोधपुर जिले के ओसियां, भोपालगढ़, शेरगढ़, लूणी, फलौदी आदि क्षेत्रों से हजारों की संख्या में किसान सम्मिलित हुए।

(पृष्ठ एक का शेष)

अपनी शक्ति...

सबके साथ ऐसा होता है लेकिन आप राज्य के शासन का एक अंश है और आपका जो भी क्षेत्र है चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो, चाहे प्रशासन के क्षेत्र में हो, चाहे चिकित्सा में या पुलिस में हो, आपका राजधर्म निर्धारित है और उस राजधर्म की पालना में आपकी नैतिकता मेरे विचार में पूरी हो जाती है। इस राजधर्म की पालना में कुछ कठिनाइयां भी आ सकती हैं, ऐसा भी लग सकता है कि यह व्यवहारिक नहीं है, नहीं कर पाएंगे। लेकिन मेरा व्यक्तिगत रूप से यह मानना है कि आपका उद्देश्य क्या है, यही महत्त्व रखता है। अगर आप किसी तरह से कोई समझौता कर रहे हैं तो उसकी भी एक सीमा है और उस समझौते के पीछे आपका उद्देश्य क्या है, वही निर्धारित करता है कि आप वास्तव में राजधर्म पालन कर रहे हैं या नहीं। अगर आप राजधर्म पालन कर लेंगे तो जो भी श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य हैं, मेरे विचार में उन सब की पूर्ति करेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसा करके जो आने वाली पीढ़ी हैं उसके लिए आप एक प्रेरणा के स्रोत होंगे। उनके लिए आप एक उदाहरण कायम करेंगे ताकि वह आपको देखकर उसी के अनुरूप कार्य करने का प्रयास करें और आपको एक रोल मॉडल माने। सेवानिवृत जनरल दिलीप सिंह ने कहा कि सेना और क्षात्रधर्म ऐतिहासिक रूप से एक-दूसरे के पर्याय रहे हैं और वर्तमान में भी इन दोनों में परस्पर सम्मान का भाव विद्यमान है। गीता जैसे हमारे शास्त्रों की सेना के संदर्भ में जब भी बात होती है, तो उनमें जहां भी क्षत्रिय शब्द प्रयुक्त होता है उसे सैनिक के लिए ही माना जाता है। हमारे समाज के अनेक लोग सेना से जुड़े हुए हैं और वे अपने दायित्व बहुत अच्छी प्रकार से निभा रहे हैं। वर्तमान में परिस्थितियां बदल रही है इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे युवाओं को संगठित करके आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार किया जाए जिससे वे नए मापदंडों पर खरे उतर कर सेना में दाखिला ले कर देश की सेवा कर सकें। वरिष्ठ आईएएस राजेश्वर सिंह ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि क्षत्रिय के लिए गीता में जो सात गुण बताए हैं उनके परिप्रेक्ष्य में हमें अपने आपको तोलना चाहिए कि उनमें से कितने गुण हमारे भीतर हैं। यदि वे गुण नहीं है तो हम कितना अपने आप को क्षत्रिय कहलाने के अधिकारी हैं, इसका चिंतन करें। क्षत्रिय को सभी समाजों को साथ लेकर चलने के लिए जाना जाता है। क्षत्रिय एकमात्र ऐसी कौम है जो केवल अपने स्वार्थ की बात ना करके सभी के हित की बात करती है। हमारी संस्कृति में प्रारंभ से ही राष्ट्र की रक्षा का दायित्व, प्रशासनिक सूत्र के संचालन का दायित्व क्षत्रिय समाज के कंधों पर ही रहा है और उसने अपने सुखों का त्याग करके भी सदैव इस दायित्व को निभाया है। पूर्व इनकम टैक्स चीफ कमिशनर उमा सिंह ने कहा कि कार्यक्रम में नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। कोई भी बेटी सशक्त तब बनती है जब उसका परिवार उसे सशक्त बनाता है। जब उसकी मां उसे संस्कार देती है, पिता का प्रोत्साहन उसे मिलता है, तभी वह सशक्त बनती है। मेरा आप से यही अनुरोध है कि अपनी बेटियों को प्रोत्साहन देकर उन्हें सशक्त बनाए क्योंकि समाज किसी एक पक्ष से सशक्त नहीं बनता। नारी और पुरुष दोनों का सशक्त होना समाज के सशक्त होने के लिए आवश्यक है। पूर्व न्यायाधिपति करणी सिंह ने समाज में न्यायिक जागरुकता का प्रसार करने और साधनहीन को भी त्वरित न्याय दिलाने के लिए कार्य करने की बात कही। डॉक्टर नरपत सिंह ने 'चिकित्सा : व्यवसाय व सेवा का समन्वय' विषय पर उद्बोधन दिया। मुख्य अभियंता सीपीडब्लूडी पुष्पेंद्र सिंह ने तकनीकी प्रबंधन में जनसेवक की भूमिका के बारे में बताया। धर्मवीर सिंह ने 'वित्तीय प्रबंधन व जागरूकता' विषय पर जानकारी दी। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक हेमंत प्रियदर्शी ने इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने किया। वरिष्ठ आरएएस महेंद्र प्रताप सिंह गिराब ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। कार्यशाला में 1100 से अधिक राजपूत अधिकारियों ने भाग लिया।

जो दूसरों... लेकिन भगवान कृष्ण और भगवान राम ने कदम बढ़ाए, वह कदम बढ़ाना ही प्रशंसनीय है। तन सिंह जी ने यह अनुभव किया - 'अंधेरी रात्रि, सभी थे सोए'। सारा संसार सो ही तो रहा है। कितने लोग जाग रहे हैं? जो कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं है वह सब सो रहे हैं, वे अंधेरी रात्रि के साये में पड़े हैं। बैठे-बैठे स्वप्न भले ही देखो, स्वप्न में कदम भले ही बढ़ा लो, उसका कोई अर्थ नहीं है। इसी तरह से हम विचार-विमर्श करने के लिए यहां एकत्रित हुए हैं, आदान प्रदान करने के लिए एकत्रित हुए हैं, बहुत अच्छी बातें आई हैं लेकिन यह केवल सुनने ही नहीं है, सुनानी ही नहीं है, एग्जीक्यूट भी करनी है। तभी इस सभा के आयोजन की विशेषता रहती है। ऐसे मेले फिर लगेंगे, पंडाल भी बड़े हो जाएंगे लेकिन यदि जो करने आए वह न कर सके तो जीवन तरुवर व्यर्थ फला है। क्या हम अधिकारी बनने के लिए आए थे? क्या हम नौकरी करने के लिए आए थे? इन बातों पर जो विचार नहीं करता है, गुमराह हठीला है। ऐसे गुमराह हठीले लोगों को जगाना है। मुझे व्यक्तिगत रुप से महात्माओं का आशीर्वाद है कि जो तुम कर रहे हो, अपने लिए नहीं कर रहे हो, अपने परिवार के लिए भी नहीं कर रहे हो, जो कर रहे हो संसार के लिए कर रहे हो। नान्यः पंथा, अन्य कोई पंथ नहीं है। इसलिए समझें और करें, यही आज की इस कार्यशाला का उद्बोध है।

जय संघ शक्ति।।

बज्जू मंडल की समीक्षा बैठक संपन्न

बीकानेर में बज्जू मंडल के स्वयंसेवकों की बैठक 13 नवंबर को संभागप्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर की उपस्थिति में संपन्न हुई। बैठक के दौरान मंडल में जून से नवंबर तक हुए कार्य की समीक्षा की गई। शिविर, शाखा, संपर्क, संघशक्ति व पथप्रेरक की सदस्यता आदि विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई तथा स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे गए। पुंदलसर में होने वाले माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर पर भी चर्चा हुई, साथ ही भलूरी में श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस तथा करणीपुरा में पूज्य तनसिंह जी की जयंती मनाने का निर्णय भी बैठक के दौरान लिया गया।

चित्तौड़गढ़ में प्रांतीय स्नेहमिलन संपन्न

चित्तौड़गढ़ प्रांत का एक दिवसीय स्नेहमिलन 27 नवंबर को संपन्न हुआ जिसमें प्रांत में अब तक हुए कार्यों की समीक्षा के साथ आगामी कार्य योजना की रूपरेखा भी तैयार की गई। 7 दिसंबर को पूज्य श्री तनसिंह सिंह जी की पुण्यतिथि पर निंबाहेड़ा में, 22 दिसंबर को संघ स्थापना दिवस पर गंगरार में तथा 25 जनवरी 2023 को पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती पर बेगूं में कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय हुआ। 8 जनवरी को चित्तौड़गढ़ में कैरियर गाइडेंस कार्यक्रम आयोजित करने का भी निर्णय हुआ। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया व प्रांत प्रमुख दिलीप सिंह रूद स्वयंसेवकों सहित बैठक में उपस्थित रहे।

नेनावा में बैठक व संपर्क यात्रा का आयोजन

13 नवंबर को बनासकांठा प्रांत के नेनावा गांव स्थित जागीरदार कोटडी में बैठक आयोजित हुई जिसमें 26 से 28 नवंबर तक नेनावा में आयोजित होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों के संबंध में चर्चा की गई। प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। इसी प्रकार 20 नवंबर को संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें आठ टीम बनाकर बनासकांठा जिले की धानेरा, दांतीवाडा, थराद, डीसा, लाखणी और पालनपुर तहसील के 36 गांवों में संपर्क किया गया। प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर, ईश्वर सिंह आरखी, शैतान सिंह चारड़ा, गोपाल सिंह जड़िया और शेर सिंह नेनावा यात्रा में सम्मिलित रहे।

राष्ट्रनायक दुगार्दास को दी श्रद्धांजलि

राष्ट्र नायक दुगार्दास राठौड़ की पुण्यतिथि पर ओसियां के महाराजा गज सिंह शिक्षण संस्थान में 24 नवंबर को श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं ने राष्ट्र नायक के चित्र पर पुष्प अर्पित किए तथा राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए उनके द्वारा किए गए त्याग और संघर्ष को स्मरण करते हुए उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

नहीं रहे ओजस्वी राजस्थानी कवि कल्याण सिंह राजावत

राजस्थानी के ओजस्वी कवि कल्याण सिंह राजावत का 22 नवंबर 2022 को 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। भारत-पाकिस्तान के बीच 1965 में हुए युद्ध के दौरान उनकी रचना 'आ जमीन आपणी, आपां जमीन का धणी' ने पूरे देश में राष्ट्रभक्ति की अलख जगाई। उन्होंने युद्ध के समय राजस्थानी काव्य सम्मेलनों में और आकाशवाणी आदि माध्यमों से अपने कविता पाठ द्वारा देशभक्ति की भावना को प्रज्वलित किया। नागौर जिले के चितावा गांव के निवासी कल्याण सिंह राजावत ने राजस्थानी भाषा के संवर्द्धन में भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया। उन्होंने राजस्थानी प्रवासियों में जन्मभूमि और मातृभाषा के प्रति चेतना जागृत करने का कार्य किया। राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलाने का आंदोलन खड़ा करने वालों में वे अग्रणी थे। सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार से सम्मानित राजावत ने कई रचनाएं लिखीं। रामतिया मत तोड़, प्रभाती, कुण कुण ने बिलमासी आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। कल्याण सिंह जी 1996 में श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वर्ण जयंती समारोह के समय सहयोगी रहे। स्वर्ण जयंती के पूर्व सप्ताह में प्रतिदिन चलने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला में कवि सम्मेलन भी हुआ जिसके आयोजन में उनका पूरा सहयोग रहा। उस समय वे भवानी निकेतन सीनियर स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। वे अपने बाल्यकाल में श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा में भी नियमित आते रहे थे।

घणाऊ के कर्नल रमेश सिंह राठौड़ हुए शहीद

चूरु जिले के घणाऊ गांव निवासी कर्नल रमेश सिंह राठौड़ 15 नवंबर को शिलांग में एक सड़क हादसे में शहीद हो गए। 49 वर्षीय रमेश सिंह 12 आर्म्ड रेजिमेंट, हेडक्वार्टर 101 एरिया में कर्नल ए के पद पर नियुक्त थे। इनके पिता कल्याण सिंह की सेना में कैप्टन के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। उनके बड़े भाई भी सेना से सेवानिवृत्त है एवं उनके बड़े पुत्र भी वर्तमान में पुणे स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में है। शहीद का पार्थिव शरीर 17 नवंबर को दिल्ली से राजगढ़ के सिद्धमुख मोड़ पहुंचा। यहां से उनके गांव घणाऊ तक उनके सम्मान में तिरंगा यात्रा निकाली गई। उनका अंतिम संस्कार पूरे सैन्य सम्मान के साथ किया गया एवं उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

गुलाब सिंह बेतीणा को भ्रातृ शोक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक गुलाब सिंह बेतीणा के बड़े भाई **कुम्प सिंह** का आकस्मिक निधन 20 अक्टूबर 2022 को हो गया। वे 29 वर्ष के थे। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

महिपाल सिंह चूली को मातृ शोक

श्रीमती रेख कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं बाड़मेर संभागप्रमुख महिपाल सिंह चूली की माता **श्रीमती रेख कंवर** धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री हीर सिंह जी चूली का देहावसान 22 नवंबर 2022 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

जैतसिंह भीमजी का गांव का देहावसान

जैत सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **जैत सिंह जी भीमजी** का गांव का देहावसान 22 नवंबर 2022 को हो गया। उन्होंने अपने जीवनकाल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 32 शिविर किए जिनमें आठ उच्च प्रशिक्षण शिविर, ग्यारह माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तथा तेरह प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री कल्ला रायमलोत छात्रावास के व्यवस्थापक

श्री हनवंत सिंह मवड़ी

की **प्रधानाचार्य**

के पद पर पदोन्नति होने पर हार्दिक शुभकामनाएं एवं उज्जवल भविष्य की मंगलकामनाएं

शुभेच्छु

ईश्वर सिंह पादरू	जालम सिंह पीपलून	मनोहर सिंह सिणेर द्वितीय	लक्ष्मण सिंह गुड़ानाल	समुन्द्र सिंह बालियाना	खीम सिंह लापुंदड़ा
परमवीर सिंह ढेलाना	जितेन्द्र सिंह गोलिया	बलवन्त सिंह दाखां	गोविंद सिंह धीरा	अर्जुन सिंह धनवा प्रथम	ईश्वर सिंह सिणेर
पदम सिंह भाउड़ा	मोंटू सिंह भागवा	पर्वत सिंह ढीढस	गणपत सिंह गोलिया	भगवत सिंह पुत्र श्री हमीर सिंह विधायक सिवाना	गोविंद सिंह गोलिया
तन सिंह सिवाना	नारायण सिंह सरपंच इंद्राणा	महेंद्र सिंह पादरड़ी	ईश्वर सिंह मीठा	मनोहर सिंह सिणेर प्रथम	छतर सिंह कुंडल
जयदीप सिंह बालियाना	विवेक सिंह सिणेर	बलवंत सिंह कोटड़ी	वीर सिंह इंद्राणा	सुरेंद्र सिंह भागवा	रिड़मल सिंह बेरसियाला
भवानी सिंह बेरसियाला	पाबु सिंह करना	नरपत सिंह अजीत	कोज सिंह सिणेर	गोविंद सिंह मवड़ी	चन्दन सिंह थोब	वाग सिंह लोहिड़ी
सोम सिंह लोहिड़ी	छतर सिंह गोल सोढान	उम्मेद सिंह रेडाणा	जेठू सिंह आबुगढ़	वीरम सिंह पादरड़ी कला	डूंगर सिंह चांदेसरा	थान सिंह खबड़ाला

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org